Lesson -7 धर्म की आड़

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर Question-Answers from Textbook

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर Short-Answer Questions

प्र.1 चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं?

उत्तर चलते-पुरज़े अर्थात चालाक लोग धर्म के नाम पर मूर्ख लोगों की शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं। वे उन्हें धर्म के नाम पर उकसाकर दंगे-फ़साद करवाते हैं। आम आदमी उन लोगों की चालाकी को न समझकर धर्म-विरुद्ध काम कर बैठता है।

प्र.2 चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं?

उत्तर साधारण आदमी के दिल में धर्म और ईमान के प्रति अटूट आस्था होती है। उसे बचपन से ही सिखाया जाता है कि धर्म के नाम पर प्राण तक दे देना वाजिब है। लकीर पीटते रहना ही वह अपना धर्म समझता है। चालाक लोग इसी अवस्था का लाभ उठाते हैं।

प्र.3 आनेवाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा?

उत्तर आनेवाला समय ऐसे किसी भी धर्म को टिकने नहीं देगा, जिसमें धर्म के नाम पर लोगों का शोषण किया जाता हो, जिसमें पूजा-पाठ का दिखावा हो। ऐसे हर काम को देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझेगा जो दूसरों की आस्था और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करेगा। आनेवाले समय में हर एक को अपने-अपने ढंग से अपने-अपने धर्म को मानने की आज़ादी होगी।

प्र.4 कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा?

उत्तर एक धर्म के माननेवालों का दूसरे धर्म के बीच टाँग अड़ाना अथवा दो धर्मों को माननेवालों के बीच टकराव की स्थिति पैदा करने को देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा।

प्र.5 पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है?

उत्तर पाश्चात्य देशों में धनी गरीबों का हर तरह से शोषण करते हैं। वे स्वयं तो ऊँचे-ऊँचे भवनों में रहते हैं और गरीब लोगों का बसेरा झोंपड़ियों में होता है। वे लोग गरीबों की कमाई से ही अमीर बने हैं। वहाँ धन की मार दिखाकर निर्धनों को वश में किया जाता है।

प्र.6 कौन-से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं?

उत्तर वे लोग जो कहने को तो नास्तिक हैं, कथित रूप से कर्मकांड नहीं करते किंतु उनके हृदय में दूसरों के प्रति दया है। जो अच्छा आचरण करते हैं और जिनमें सुख-दुख का भाव आस्तिकों से ज़्यादा है, जो मूर्खों को उकसाकर स्वार्थ-सिद्धि को बुरा मानते हैं, ऐसे लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर Long-Answer Questions

प्र.1 धर्म और ईमान के नाम पर किए जानेवाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता है?

उत्तर लोगों में शिक्षा की ज्योति जगाकर, मिथ्या आडंबरों का पर्दाफ़ाश करके और धर्म के सच्चे रूप को सिखाकर धर्म के नाम पर किए जानेवाले भीषण व्यापार को रोका जा सकता है। उन्हें यह समझाना होगा कि दंगा-फ़साद करानेवाले लोग धार्मिक नहीं बल्कि

Scanned with CamScanner

पाखंडी हैं। अपने नेतृत्व और बड़प्पन को बनाए रखने के लिए वे मूर्खों को उकसाते हैं। ऐसे लोगों के विरुद्ध सुधीजनों को आगे आना होगा। तभी इस घिनौने, भीषण व्यापार को रोका जा सकता है।

प्र.2 'बुद्धि पर मार' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

उत्तर 'बुद्धि पर मार' का अर्थ है— लोगों को बेवकूफ़ बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना। लेखक ने कहा है कि हमारे देश में लोगों की बुद्धि पर धर्म के नाम का परदा डाल दिया जाता है और उनसे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के सभी काम करवा लिए जाते हैं। पश्चिम के लोग धन के बल पर गरीबों का शोषण करते हैं। दोनों ही अवस्थाओं में बुद्धि पर मार ज़्यादा खतरनाक है क्योंकि इस अवस्था में सोचने-समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

प्र.3 लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?

उत्तर इस पाठ को पढ़ने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि धर्म वैयक्तिक भावना है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म मानने की आज़ादी होनी चाहिए। जो जिस धर्म को चाहे उसे माने। कोई किसी की भावना अथवा धर्म में रुकावट पैदा न करे। धर्म में शुद्ध आचरण, व्यवहार और चरित्र को बल मिलना चाहिए। धर्म में दंगे-फ़साद का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। दूसरों को दुख पहुँचाना, हिंसा करना, बेईमानी करना धर्म-विरुद्ध कार्य माने जाने चाहिए।

प्र.4 महात्मा गांधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर महात्मा गांधी के प्रत्येक कर्म में धर्म था। वे कोई भी कार्य धर्म-विरुद्ध नहीं करते थे। उनके लिए पूजा-पाठ करना धर्म नहीं था, बल्कि वे धर्म को अपने जीवन में उतार लेने में विश्वास रखते थे। गांधी जी के लिए धर्म का मतलब था — सत्य, अहिंसा, दूसरों की सेवा, पशु-पक्षियों का ध्यान, देशप्रेम की भावना, भाईचारा, आपसी सौहार्द, एकता और शिक्षा की भावना।

प्र.5 सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है?

उत्तर समाज में व्यक्ति एक-दूसरे से सीख लेता है। इसलिए सबके कल्याण की दृष्टि से अपने आचरण को सुधारना ज़रूरी हो जाता है क्योंकि हम दूसरे से भी वही अपेक्षा रखते हैं। हमें पहले स्वयं दूसरों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना होगा तभी हम किसी से अपने प्रति अच्छे आचरण की उम्मीद कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

भाषा-अध्ययन

प्र.1 उदाहरण के अनुसार शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए—

उत्तर

सुगम	×	दुर्गम	स्वार्थ	×	परमार्थ
धर्म	×	अधर्म	दुरुपयोग	×	सदुपयोग
ईमान	×	बेईमान	नियंत्रित	×	अनियंत्रित
साधारण	×	असाधारण	स्वाधीनता	×	पराधीनता

प्र.2 निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए—
ला, बिला, बे, बद, ना, खुश, हर, गैर

उत्तर

ला	—	लाइलाज, लामज़हब	ना	-	नासमझ, नापाक
बिला	—	बिला नागा, बिला वजह	खुश	-	खुशमिज़ाज़, खुशकिस्मत
बे	—	बेअदब, बेलगाम	हर	-	हर रोज़, हरदम
बद	—	बदनाम, बदमिज़ाज	गैर	-	गैरज़िम्मेदार, गैरहाज़िर

प्र.3 उदाहरण के अनुसार 'त्व' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाइए—

उदाहरण — देव + त्व = देवत्व

उत्तर

नारी + त्व = नारीत्व
प्रभु + त्व = प्रभुत्व
मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व
सती + त्व = सतीत्व
दास + त्व = दासत्व

प्र.4 निम्नलिखित उदाहरण को पढ़कर पाठ में आए संयुक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए—

उदाहरण — चलते-पुरज़े

उत्तर समझता-बूझता, पढ़े-लिखे, इने-गिने, मन-माना, स्वार्थ-सिद्धि, लड़ाना-भिड़ाना, धर्म-ईमान, दीन-हीन, नित्य-प्रति, पंच-वक्ता, दिन-भर, पूजा-पाठ, देश-भर, सुख-दुख, भली-भाँति।

प्र.5 'भी' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए—

उदाहरण — आज मुझे बाज़ार से होते हुए अस्पताल भी जाना है।

उत्तर

क. अरे! तुम भी आ गए।
ख. गौरी को भी साथ ले चलो।
ग. सभी काम जल्दी निपटा लो, सोना भी है।
घ. तुम्हारे पैर में भी चोट लग गई?
ङ. राकेश को भी काम पर लगा लेना।

Scanned with CamScanner